अजायब बानी

मासिक पत्रिका सितम्बर-2024

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✡ बानी

वर्ष–बाइसवां	अंक–पांचवां	सितम्बर–2024

11 सितम्बर बाबा जी का शुभ जन्मदिन

2 अज शुभ दिहाड़ा ऐ
4 भजन–अभ्यास
5 नाम के बिना पछताना पड़ेगा
15 गुरु की सेवा
21 हर आत्मा एक समान है
32 धन्य अजायब

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम**
16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**
e-mail : dhanajaibs@gmail.com 270 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

बाबा जी, आपको जन्मदिन की लख-लख बधाईयां

अज शुभ दिहाड़ा ऐ, भागां नाल आया ऐ,
सतगुरु जी प्यारे दा, अज दर्शन पाया ऐ, x 2

1. *जग औजड़ उलझे नूं, जग भुल्ले भटके नूं,*
जग वहमां जकड़े नूं, जग थिड़के अटके नूं, x 2
बाणी उपदेश सुणा, गुरां राहे पाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

2. *कुझ नूर दियां गल्लां, कुझ दूर दियां गल्लां,*
होठां ते थिरकन एयों, ज्यों सागर दियां छल्लां x 2
कुझ लंघे वक्त दियां, कुझ ऐस्से वक्त दियां,
कुझ अगले वक्त दियां, गल्लां कैह–कैह गुज्झियां,
दिल टुंब जगाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

3. *इस फ़ानी दुनियां चों, जो पुज्ज प्यारा ऐ,*
जो वस है लालच दे, बेचमक सितारा ऐ x 2
इस जग हनेरे चों, पापां दे डेरे चों,
ओहदे ते ऐहदे चों, तेरे ते मेरे चों,
सच्चे ते झूठे दा, जिस भेद मिटाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

4. *जो इस राहे आवे, जो इस राहे जावे,*
नरकां दा भागी वी, स्वर्गां दी शह पावे x 2
ऐह अपनी खेती ऐ, ऐहनूं जेहड़ा करदा ऐ,
अगेती या पछेती ऐ, ना भुक्खा मरदा ऐ,
इस राहे हर पापी, टुर भगत कहाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

5. *ना विच मसीत मिले, ना विच मंदिर प्रभु,*
ना विच उजाड़ां दे, है सब अंदर प्रभु, x 2
ऐन्हां बाहरी अक्खियां नूं, जद बंद कर लैंदे हां,
गुरुआं दी सिखया दा, सिमरन कर लैंदे हां,
गुरुआं इस राहे पा, रब आप मिलाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

6. *बूँदा दे ओहले चों, बदलां दे ओहले चों,*
कक्करां ते स्यालां चों, गर्मी दे शोले चों, x 2
गुरुआं दी कृपा ने, गुरुआं दी बाणी ने,
गुरुआं दे वाकां ने, लक्ख पापी कढे ने,
जीन्नां ने गुरुआं दा, इक नाम ध्याया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

7. *अजायब दी टेक ऐहो, कृपाल दे लग सेवे,*
विच रज़ा दे रह राज़ी, प्रभु जो वी दे देवे, x 2
ऐह रस्ता है तेरा, इस तों जे भटकेंगा,
औजड़ विच पै जाऐंगा, जिल्लत विच अटकेंगा,
जिस गुरु भुलाया ऐ, उस सुख ना पाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

मार्च 1992

मैं अपने गुरुदेव महाराज सावन-कृपाल का अति धन्यवादी हूँ जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का और अपनी भक्ति करने का मौका दिया, यह सब उन्हीं की दया है। आत्मा और नाम का असल एक ही है लेकिन जब तक यह आत्मा फिर नाम रूप नहीं हो जाती नाम के साथ नहीं जुड़ जाती तब तक इसे सच्चा सुख और सच्ची शान्ति नहीं मिल सकती।

हमारी आत्मा ने जब से वह शान्ति का देश छोड़ा है यह सदा ही शान्ति की तलाश में फिर रही है। जब आत्मा मन के मंडल में उतरी तो अपना असल भूल गई, जब कारन देश में आई तो कारन पर्दा चढ़ गया। जब सूक्ष्म देश में आई तो एक पर्दा और चढ़ गया, यह परमात्मा से दूर हो गई, इसका प्रकाश कम हो गया। जब स्थूल देश में आई यहां एक और मजबूत पर्दा चढ़ गया। यह संसार में माता-पिता और बहन-भाई बनाकर इसी में शान्ति ढूंढने लगी।

हम देखते ही हैं कि किसी व्यापार में घाटा हो जाए तो बहुत सदमा लगता है, कईयों का तो हार्ट फेल हो जाता है। अगर हमारे साथी जिनके साथ हमारा बहुत लगाव होता है, वे साथ छोड़ जाएं तो हमें सदमा लगता है लेकिन यह आत्मा जिस शान्ति के देश से बिछड़कर आई है, उस परमात्मा को प्राप्त करने के लिए न हमारा हार्ट फेल होता है और न ही कोई सदमा लगता है कि ओह! मैं किस राजघराने की बच्ची थी लेकिन मन का साथ लेकर आज इन्द्रियों का कूड़ा-करकट ढो रही हूँ।

जिस तरह हमारे गुरुदेव ने हमारे ऊपर दया की है हमें अपनी भक्ति में बैठने का मौका दिया है। हम सबको जो रास्ता बताया गया है, हमने प्रेम-प्यार से अभ्यास करना है। हम जिस चीज का रोज अभ्यास करते हैं, उसमें हमें महारत हो जाती है। हाँ भई, आंखें बंद करके अपना अभ्यास करें।*

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नाम के बिना पछताना पड़ेगा

13 अक्टूबर 1992 | गुरु नानकदेव जी की बानी | अहमदाबाद | DVD-565 (3)

अपने गुरुदेव सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार करते हैं जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। कबीर साहब ने कहा है:

गुरु मानुष करि जानते, ते नर कहिये अंध।
महा दुखी संसार में, आगे जम के बंध।

मैं कई बार गुरु नानक देव जी महाराज और महाराज सावन सिंह जी के समय के बारे में बताया करता हूँ कि उस समय लोग पत्थर पूजक हो गए थे, रिद्धि–सिद्धि में लग गए थे, परमात्मा को भूलकर हठ योग में ही मुक्ति समझने लग गए थे। मुझे भी थोड़ा–बहुत देखने का मौका मिला है कि उस समय किसी के पास 'एक शब्द' और किसी के पास 'दो शब्द' का भेद था, वे लोगों को रिद्धि–सिद्धि से प्रभावित करते थे।

इन चीजों का रूहानियत के साथ कोई ताल्लुक नहीं होता बल्कि ये चीजें हमें रूहानियत से दूर ले जाती हैं। गुरु नानक देव जी उन जगहों पर पहुँचते रहे हैं, जहां कोई फकीर इस तरह रिद्धि-सिद्धि से काम लेता था और लोगों को प्रभावित करता था। हिन्दुस्तान में उन दिनों आने-जाने के साधन नहीं थे, मुश्किल यात्राएं पैदल चलकर ही करनी पड़ती थी। गुरु नानक देव जी ने या महाराज सावन सिंह जी ने इन लोगों को हराने में बहादुरी नहीं समझी थी या ये बहसबाजी करने के लिए वहाँ नहीं पहुँचते थे।

सन्तों का मत भक्ति मार्ग है, प्यार का मत है। उन महापुरुषों ने सिर्फ इतना ही सिद्ध करना था कि मुक्ति नाम में है, हम मन के पीछे लगकर जो भी कर्मकांड या रीति-रिवाज करते हैं, ये सारे ही कर्मकांड हम बाहर छिलके को इकट्ठा कर रहे हैं, फल तो अंदर है। जो स्वाद बादाम की गिरि में है, वह स्वाद उसके छिलके में नहीं होता।

गुरु नानक देव जी महाराज बहुत प्यार से कहते हैं कि देखो प्यारेयो, मुक्ति नाम में है, पूरे महात्मा के बिना नाम नहीं मिलता। नाम के बिना चाहे कितने भी श्रेष्ठ कर्मकांड या रीति-रिवाज करें, चाहे कितना भी अच्छा जीवन क्यों न जी रहे हों फिर भी हम परमात्मा के दरबार में नहीं पहुँच सकते। आखिरी समय में हमें कीमती स्वासों की कद्र होती है तब पता चलता है कि परमात्मा ने हमें कितनी कीमती पूंजी दी थी जिसे हम व्यर्थ ही गंवा चले हैं लेकिन उस वक्त पछताने से कुछ नहीं बनता।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि देखो प्यारेयो, बेशक हम मन के पीछे लगकर कितनी भी कठिन साधना क्यों न कर लें, कपड़े उतारकर नग्न होकर घूमने लग जाएँ, पैरों में जूते न पहनें, भगवा या खास किस्म के कपड़े पहनकर वेश धारण कर लें या शरीर पर कोई चिन्ह या चक्र बना लें, जनेऊ पहन लें, किसी और किस्म का रीति-रिवाज बना लें कि हमें परमात्मा मिल जाएंगे तो अन्त में हमें **नाम के बिना पछताना पड़ेगा**।

उस वक्त हिन्दुस्तान में आमतौर पर बहुत से ऐसे साधू भी मिल जाते थे जो कपड़े उतारकर शरीर पर राख मल लेते थे। मुझे भी एक उदासी साधू मिला था जिसने मेरे पास भस्म लगाने की काफी तारीफ की कि इससे बहुत नशा आता है, अंदर से हिलौर उठती है। मैंने तीन-चार महीने शरीर पर राख लगाई लेकिन मेरे अच्छे कर्म थे कि मैं जल्द ही बाबा बिशन दास जी के पास पहुंच गया। बाबा बिशनदास जी ने कहा, ''देख भई, गधे भी राख पर लेटते हैं अगर कोई सरूर आता होता या नाम का रंग चढ़ता तो इन्हें भी चढ़ जाना चाहिए था।''

प्यार प्यार ही होता है, तड़प तड़प ही होती है। मुझे जिंदगी में परमात्मा से मिलने के लिए किसी ने जो भी तरीका बताया, मैं वह करता रहा हूँ।

मुझे एक साधू मिला उसने बताया कि शंख बजाने में बहुत आनंद आता है। हमारे हिन्दुस्तान में रिवाज है कि जब कोई शंख बजाए और जहां-जहां आवाज जाती है वहां लोग 'वाहेगुरु' या 'राम राम' कहते हैं। उसने बताया कि हम कितने ही लोगों के मुंह से 'वाहेगुरु' या 'राम राम' कहलवा लेते हैं। मैं जब शाम को शंख बजाता तो पाँच-सात कुत्ते उसी तरह ऊंची-ऊंची आवाज में हू-हू करने लग जाते।

जब मुझे शंख बजाते हुए दो-तीन महीने हो गए तो वहाँ एक औरत ने आकर मुझसे कहा, ''अगर तुम्हें कोई रोटी नहीं देता तो मैं रोटी ला दिया करूंगी।'' उसके बाद से मैंने शंख बजाना छोड़ दिया कि अगर मेरे शंख बजाने की कद्र इंसान नहीं करते तो भगवान क्या करेंगे?

प्यारेयो, मैं सांस-सांस के साथ अपने गुरुदेव का धन्यवाद करता हूँ। मुझे ही पता है कि मैं तड़प में कितना दुखी था और मुझ पर कितनी दया की गई है इसलिए मैं उनके आगे नमस्कार करता हूँ।

हठु करि मरै न लेखै पावै, वेस करै बहु भसम लगावै।।
नामु बिसारि बहुरि पछुतावै।। नामु बिसारि बहुरि पछुतावै।।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि मन के पीछे लगकर हम जो कर्म करते हैं जैसे शरीर पर भस्म वगैरह लगा लेते हैं लेकिन परमात्मा के दरबार में इनका कौड़ी मूल्य नहीं और इनसे कोई सहायता नहीं मिलती। आखिरी समय में हमें **नाम के बिना पछताना पड़ेगा।**

तूँ मनि हरि जीउ तूँ मनि सूख, नामु बिसारि सहहि जम दूख।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि नाम को भूलकर चाहे किसी भी रास्ते पर चलें, यम लिहाज नहीं करेंगे। यही एक परवाना है, जिस पर नाम की मोहर लग गई उसे यम नहीं पकड़ते बाकी सबको यम कान से पकड़कर ले जाता है।

जिनी नामु विसारिआ बहु करम कमावहि होरि।
नानक जम पुरि बधे मारीअहि जिउ सन्नी उपरि चोर।।

गुरु साहब कहते हैं:

हरि जीउ की है सभ सिरकारा, एहु जमु किआ करे विचारा।।

चोआ चंदन अगर कपूरि, माइिआ मगनु परम पदु दूरि। नामि बिसारिऐ सभु कूड़ो कूरि।। नामि बिसारिऐ सभु कूड़ो कूरि।।

गुरु साहब एक तुक में सवाल करते हैं और दूसरी तुक में खुद ही उसका जवाब देते हैं, उनकी बानी में यही खूबी है। आप कहते हैं, ''बेशक आप रोज देह को चन्दन से स्नान कराएं, चाहे इस पर कितनी ही वाशनाएं लगा लें फिर आप यह कहें कि इसे ज्यादा सँवारने से या ज्यादा चन्दन वगैरह लगाने से परमात्मा मिलेंगे तो ऐसा नहीं है। हमें **नाम के बिना पछताना पड़ेगा,** नाम के बिना यह सारा बाहरी आडम्बर है, झूठ है।''

नेजे वाजे तखति सलामु, अधकी तृसना विआपै कामु। बिनु हरि जाचे भगति न नामु।। बिनु हरि जाचे भगति न नामु।।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि चाहे सारी दुनिया का बादशाह बन जाए बेशक बहुत सारी फौज उसे रोज सलामी दे, वह जिस तरफ जाए तो बाजे–गाजे बज रहे हों, आतिशबाज़ी चल रही हो और जय–जयकार हो रही हो फिर भी तृष्णा उठेगी। अच्छे महलों में रहने के कारण अंदर काम वासना ज्यादा ज़ोर डालेगी। हम देख ही रहे हैं अगर राजा लोग संतुष्टि महसूस करते हों तो उन्हें शांति होती, उनकी तृष्णा खत्म हुई होती। आज दुनिया में एक–दूसरे पर तौपें क्यों कसकर बैठे होते, क्यों लड़ाई–झगड़े का सामान इकट्ठा कर रहे होते। इससे यह साबित होता है कि तृष्णा और भड़क उठती है कि मैं ही सारी दुनिया का बड़ा बादशाह बन जाऊँ।

मुगल खानदान का बादशाह महान अकबर एक बार बाहर सैर करता हुआ आगे निकल गया। उसे भूख ने तंग किया तो वहाँ एक किसान अपनी जमीन को पानी दे रहा था। किसान ने राहगीर समझकर घोड़े को बांध दिया और उसके पास जैसा भी था, उसने अकबर को खाना खिलाया और पानी पिलाया। अकबर के दिल में यह ख्याल आया कि जब यह मेरी कचहरी में आए तो मैं इसे कोई अच्छी चीज़ दूँ। इसे क्या पता है कि इसने किसी बादशाह को खाना खिलाया है और पानी पिलाया है। अकबर ने उसे एक चिट्ठी लिखकर दे दी कि मैं अकबर हूँ, जब भी तुम्हें कचहरी में कोई काम हो तो आकर मुझसे मिल लेना।

किसान ने कहा देखो जी, हम आपकी जमीन का टैक्स तो दे ही देते हैं, हमें क्या काम पड़ना है? कुछ समय बाद वहाँ अकाल पड़ गया, किसान के दिल में ख्याल आया कि चलकर अकबर से मिलते हैं। जब वह अकबर से पास गया और जाकर वह चिट्ठी दिखाई तो अकबर ने उसे बुला लिया। आगे महल में अकबर नमाज़ पढ़ रहा था। नमाज़ पढ़कर उसने हाथ ऊपर की तरफ किए, किसान खड़ा यह सब कुछ देख रहा था।

जब अकबर ने नमाज़ अदा कर ली तो उसने किसान से पूछा कि आओ भई, कैसे आना हुआ? किसान ने कहा कि पहले आप यह बताएं कि आप यह क्या कर रहे थे? पहले आपने नमाज़ पढ़ी फिर हाथ ऊपर की तरफ किए? बादशाह अकबर ने कहा कि मैं खुदा के आगे अरदास कर रहा था, खुदा से दुआ मांग रहा था कि आप मेरे राज्य में बारिश करें, अमन-चैन रखें ताकि मैं और भी अच्छा और बेहतर राज कर सकूँ। किसान वहाँ से चुपचाप चल पड़ा। बादशाह अकबर ने पूछा कि तुम जा क्यों रहे हो? किसान ने कहा कि मैं तो आपको बादशाह समझकर आया था लेकिन आप तो सबसे बड़े भिखारी हैं, आप जिस रब से मांग रहे हैं, मैं भी उसी रब से मांग लूँगा।

प्यारेयो, गुरु नानक देव जी महाराज के कहने का भाव इतना ही है कि यहाँ की मान-बड़ाई, बाजे-गाजे और फौज की सलामियाँ सब कुछ यहीं रह जाना है, **नाम के बिना पछताना ही पड़ेगा**।

हमारे हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू काफी अच्छे हुए हैं, उनकी महाराज कृपाल सिंह जी के साथ काफी अच्छी नज़दीकियाँ थीं। महाराज कृपाल सिंह जी ने उनसे कहा, ''पंडित जी, नाम जपें, नाम की तरफ आएँ।'' पंडित जी ने कहा कि हिन्दुस्तान को संभालने वाला कौन है? महाराज जी हँसकर कहने लगे, ''देखो भई, हो सकता है कि हम और आप न रहें लेकिन हिन्दुस्तान संभालने वाला कोई न कोई जरूर पैदा हो जाएगा।''

प्यारेयो, पंडित जवाहरलाल नेहरू से लेकर दो-तीन प्रधानमंत्री संसार छोड़ गए हैं, हिन्दुस्तान को राजीव गांधी का बिछोड़ा भी झेलना पड़ा लेकिन आखिर में बार-बार कबीर साहब का शब्द बोलते हैं:

मन लागो मेरो यार फकीरी में

वादि अहंकारि नाही प्रभ मेला, मनु दे पावहि नामु सुहेला।।

परमात्मा किसी से वाद–विवाद और बहस बाजी करने से नहीं मिलते और न ही अहंकार करने से मिलते हैं बल्कि हम जितना बहस बाजी और अहंकार करते हैं कि मेरे जितना कौन समझदार है, मैं ही उत्तम हूँ? उतना ही हम परमात्मा से दूर हो जाते हैं।

दूजै भाइ अगिआनु दुहेला, बिनु दम के सउदा नही हाट।
बिनु बोहिथ सागर नही वाट।। बिनु बोहिथ सागर नही वाट।।

गुरु नानक देव जी कहते हैं, ''अगर हमारे पास मूलधन न हो तो हम कोई व्यापार या सौदा नहीं कर सकते। इसी तरह अगर हमने समुन्द्र से पार जाना है तो हमें जहाज की जरूरत पड़ती है। जहाज के बिना हम समुन्द्र पार नहीं कर सकते।'' आजकल तो हवाई जहाज के भी साधन हैं लेकिन जिस वक्त गुरु नानक देव जी महाराज ने यह बानी लिखी थी, उस वक्त आमतौर पर लोग नावों से दरिया पार करते थे इसलिए आप कहते हैं कि जिस तरह बिना नाव के दरिया को पार करना मुश्किल है उसी तरह नाम के बिना परमात्मा के पास जाना और परमात्मा से मिलना मुश्किल है।

बिनु गुर सेवे घाटे घाटि। बिनु गुर सेवे घाटे घाटि।।

गुरु साहब ने बहुत अच्छी दो मिसालें देकर समझाया है कि बिना मूलधन के हम व्यापार नहीं कर सकते और नाव के बिना हम दरिया पार नहीं कर सकते। इसी तरह गुरु का नाम जपे बिना और गुरु का नाम प्राप्त किए बिना हमें सदा घाटा ही है।

प्यारेयो, जब तक गुरु नहीं मिलते और नाम नहीं मिलता तब तक हमें अपनी जिंदगी के मूल्य का पता ही नहीं चलता। जब गुरु और नाम मिल जाते हैं तो पता चलता है कि मैंने पिछली आयु तो बेकार ही खराब कर दी है, लेखे में तो इससे बाद की जिंदगी आई है।

तिस कउ वाहु वाहु जि वाट दिखावै, तिस कउ वाहु वाहु जि सबदु सुणावै।।
तिस कउ वाहु वाहु जि मेलि मिलावै, तिस कउ वाहु वाहु जि मेलि मिलावै।।

आप प्यार से कहते हैं कि मैं उन पर सदा कुर्बान हूँ और उनका धन्यवाद करता हूँ जो नाम की जोत जगाते हैं, शब्द सुनाते हैं और बिछड़ी आत्मा को परमात्मा के साथ मिलाते हैं।

वाहु वाहु तिस कउ जिस का इहु जीउ, गुर सबदी मथि अंमृतु पीउ।
नाम वडाई तुधु भाणै दीउ, नाम वडाई तुधु भाणै दीउ।।

गुरु नानक देव जी महाराज गुरु की महिमा करते हैं कि बेशक जीव, पिण्ड, प्राण और सब कुछ उस गुरु का है लेकिन हमें इसकी समझ तब आती है जब हम फैले ख्याल को सिमरन के जरिए तीसरे तिल पर एकाग्र कर लेते हैं कि सब कुछ तो गुरु का ही था लेकिन यह तो इस तन को एक बड़ाई थी जिस तन में आकर वे मिले। मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ जो उन्होंने ज्यादा मेहनत करके हमसे 'शब्द–नाम' की कमाई करवाई। हमें उद्धम, प्यार और लगन बख्शी।

आप प्यार से कहते हैं कि प्यारेयो, नाम न तो हम चतुराई से प्राप्त कर सकते हैं, न धन–दौलत से और न हुकूमत से ही प्राप्त कर सकते हैं। यह तो हम आपको पसंद आ गए और आपको हमारी आत्मा पर तरस आ गया तभी आपने हमें अपने नाम की सच्ची और पवित्र दात दी।

नाम बिना किउ जीवा माइ, अनदिनु जपतु रहउ तेरी सरणाइ।
नानक नामि रते पति पाइि।। नानक नामि रते पति पाइि।।

गुरु नानक देव जी महाराज ने सारे शब्द में हमें पहले तो हठयोग का बताया कि ये कौड़ी के दाम के भी नहीं हैं। हम इनसे मालिक के दरबार में नहीं जा सकते, नाम के बिना सब घाटे में है और हमें **नाम के बिना पछताना पड़ेगा**। हमें भी चाहिए कि जैसे हमारे गुरुओं ने हमें यह तोहफा दिया है, हम भी सच्चे दिल से 'शब्द–नाम' की कमाई करें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा सेवादार प्रेमियों को एक संदेश

गुरु की सेवा

19 जुलाई 1990

सेनबार्टन, अमेरिका

सबसे पहले मैं अपने गुरुदेव परमपिता महाराज कृपाल का धन्यवादी हूँ जिन्होंने अपने मुबारक चरण डालकर इस धरती को पवित्र किया। गुरु रामदास जी ने अपनी बानी में उस जगह को बहुत पवित्र माना है और कहा है कि जहाँ पर जाकर गुरु अपना वक़्त या थोड़ी घड़ियाँ गुज़ारते हैं, वहाँ जो गुरुसिख सतगुरु को पसंद आ जाते हैं वे गुरु को प्यारे लगते हैं, वे उस जगह की संभाल करते हैं।

जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे।
गुरसिखीं सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा।।

जो गुरुसिख वहां मेहनत करते हैं, **गुरु की सेवा** करते हैं, अभ्यास करते हैं, गुरु उनकी मेहनत सफल करते हैं, अपने खजाने में दाखिल करते हैं।

गुरसिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा।
जिन्न नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा।।

जो अपने गुरु को कुल मालिक समझकर तन, मन, धन से गुरु की पूजा करते हैं, गुरु का दिया हुआ काम करते हैं, उनकी भी पूजा होती है। मालिक उन्हें भी अपने घर में जगह देते हैं। उनकी दया से ही हम सब इकट्ठे हुए हैं। उन्होंने हमें भक्ति करने और एक दूसरे के साथ मिलाप करने का यह एक जरिया बनाया है कि किस तरह इकट्ठे होना है, मेरी याद मनानी है और अपने जीवन को सफल करना है।

गुरु की सेवा के बारे में हमें गुरु रामदास जी महाराज की हिस्ट्री से बहुत अचरज शिक्षा मिलती है कि **गुरु की सेवा** गरीब को अमीर बनाती है और नीचे से ऊँचा करती है। गुरु रामदास जी महाराज बहुत ही गरीब परिवार में पैदा हुए थे। बचपन में ही उनके सिर से माता-पिता का साया

उठ गया था। जब गुरु रामदास जी महाराज सहारे की आशा से ननिहाल गए तो वहां भी आपको उनका सहारा नहीं मिला। उन्होंने बचपन से ही दस नाखूनों की मेहनत से रोज़ी–रोटी कमानी शुरू की, टोकरी लगाकर उबले हुए चने बेचने का छोटा–सा काम करते थे।

गुरु अमरदेव जी घर में अपनी धर्मपत्नी के साथ अपनी लड़की के रिश्ते के लिए विचार कर रहे थे कि इतने में वह बच्चा जो गुरु रामदास थे, उन्होंने हौका दिया, ''घुंगणियां ले लो।'' तब गुरु अमरदेव जी की निगाह उन पर पड़ी। हिन्दुस्तान में परंपरा है कि बच्चों का रिश्ता माता–पिता ही तय करते हैं। गुरु अमरदेव जी महाराज की पत्नी ने कहा कि कोई ऐसा ही लड़का हो तो अच्छा है। गुरु अमरदेव जी महाराज की प्यार भरी निगाह पड़ी तो उन्होंने कहा, ''ऐसा तो फिर यही है।'' गुरु अमरदेव जी महाराज ने रामदास से कुछ नहीं पूछा और अपनी लड़की का रिश्ता कर दिया।

हिन्दुस्तान के रीति–रिवाज के मुताबिक गुरु अमरदेव जी महाराज ने कहा कि हमारे भल्ला कुल में यह रीत है कि घर से लड़की भी देते हैं और साथ में तोहफे भी देते हैं। अमरदेव जी ने रामदास से कहा, ''मांग, तू क्या चाहता है?'' गुरु रामदास जी ने कहा कि मुझे कुछ भी नहीं चाहिए, आप मुझे नाम का दान दे दें। गुरु रामदास जी ने गुरु अमरदेव जी महाराज को दुनियावी रिश्तेदार नहीं समझा बल्कि कुलमालिक समझकर दिन–रात सेवा के लिए कमर कस ली। यह **गुरु की सेवा** ही थी जिसने उन्हें कुल मालिक के घर में परवान किया और वे नीचे से ऊँचे हो गए, सारी दुनिया में पूजे गए। हम आज भी प्रेम से उनसे प्रेरणा प्राप्त करते हैं कि उन्होंने **गुरु की सेवा** की और सेवा करके ही सारा मान प्राप्त किया।

कबीर साहब ने एक छोटी जाति और छोटे घराने में आकर मालिक की भक्ति और सेवा की। हमें भी प्रेरणा दी कि गुरु का हुक्म मानना है और मन को बीच में नहीं आने देना। हिन्दुस्तान में उस वक्त एक बड़ा

शक्तिशाली बादशाह लोदी सिकंदर हुआ है। गुरु रामदास जी के वक्त में भी मुग़ल खानदान का बड़ा विशाल राज्य था। उन राजाओं के किलों के निशान तो हमें नज़र आते हैं पर कोई उनका जन्मदिन मनाने वाला नहीं, कोई उनकी याद मनाने वाला नहीं लेकिन जिन महान पुरुषों ने **गुरुओं की सेवा की**, नाम जपा, तन मन धन सब कुछ गुरु पर वार दिया, आज हम उन्हें प्यार से याद करते हैं। हिन्दुस्तान में करोड़ों लोग आज भी कबीर साहब का और गुरु रामदास जी का जन्मदिन मनाते हैं।

हम महान हस्तियों और महापुरुषों की याद में बैठे हैं। महाराज सावन सिंह जी की हिस्ट्री आप लोगों ने अच्छी तरह पढ़ी है, सब जानते हैं कि उन्होंने अपना तन मन धन अपने गुरु पर वार दिया। सच्चे दिल से सेवा की और गुरु घर में मान प्राप्त किया जिसे कोई हुकूमत छीन नहीं सकती। इसी तरह महान गुरु महाराज कृपाल सिंह जी ने महाराज सावन सिंह जी की सेवा की, उन पर अपना तन मन धन वार दिया। हमारे सामने ही है कि आज हम उन्हें प्यार से याद करते हैं। भाई गुरदास जी ने कहा है:

विणु सेवा धृगु हथ पैर होर निहफल करणी।

मुझे बहुत खुशी है कि बहुत सारे प्रेमी अपने घरों की जिम्मेदारियां छोड़कर कई महीनों से तन से मन से और धन से यहां सेवा कर रहे हैं। महाराज आपकी सेवा की बहुत कद्र करते हैं। आपने सेवा में जो भी टाइम यहां बिताया है, वह उनके खज़ाने में दाखिल है, उनके रजिस्टर में दर्ज है। महाराज जी कहा करते थे कि सेवक मेरे दिल पर लिखे हैं। मैं आपको प्यार से यह भी बताना चाहता हूँ कि सेवा कर लेनी आसान है, हम एक दूसरे को देखकर सेवा कर भी लेते हैं, हमारे अंदर उत्साह भी आ जाता है लेकिन सेवा संभालकर रखना मुश्किल होता है।

प्यारेयो, सेवा करके हमें मान नहीं करना चाहिए, अपने आपको बीच में नहीं आने देना चाहिए। हमें सदा यह कहना चाहिए और सतसंगी को

हमेशा यह मान कर चलना चाहिए कि हमने **गुरु की सेवा** में तन से जो टाइम बिताया है, धन लगाया है या मन से सिमरन किया है यह महान गुरु की ही दया है, यह गुरु ने ही करवाया है। गुरु नानक साहब ने कहा था:

मति थोड़ी सेव गवाईऐ।

हमारा जानी दुश्मन मन हमारे अंदर है, यह कोई वक्त हाथ से नहीं जाने देता। सेवा करके यह बीच में अपना आप खड़ा कर लेता है, अहंकार की दीवार साथ ही खड़ी कर लेता है कि मैंने **गुरु की सेवा** की है अगर मैं ऐसा नहीं करता तो यह किस तरह हो सकता था?

मैंने व्यक्तिगत तौर पर महाराज कृपाल सिंह जी को किसी आदमी से बात करते हुए सुना। महाराज कृपाल सिंह जी ने महाराज सावन सिंह जी के एक शिष्य की डेरे में मदद की थी। मेरे ही आश्रम में वह महाराज जी की तारीफ कर रहा था। महाराज कृपाल सिंह जी ने उससे कहा, ''प्यारेया, आज तो आप यह बात कर बैठे हो लेकिन आगे से ऐसी बात नहीं करनी। इसमें मेरा कोई एहसान नहीं था, मैं अपने गुरुदेव का धन्यवादी हूँ जिन्होंने मेरे अंदर बैठकर मुझे प्रेरणा दी और मुझसे काम करवा लिया।''

कल मैंने दुनियावी तौर पर और अंदरूनी तौर पर आपकी सेवा देखी, मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने हर जगह पर्दे के पीछे गुरु को ही काम करते हुए देखा। आपको पता है कि जिन प्रेमियों ने लंगर में सेवा की, उनकी वजह से प्रेमियों को सहूलियत मिलेगी, प्रेमी खाना खाएंगे। जिन्होंने तम्बू वगैरह

की सेवा की, प्रेमियों के ठहरने, नहाने–धोने या इधर–उधर आने–जाने की सुविधा बनाई, लोग भजन–अभ्यास करेंगे, फ़ायदा उठाएंगे। अगर इन प्रेमियों ने सेवा की तभी लोग भजन कर सकेंगे, आराम भी कर सकेंगे।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जब इंसान इंसान की मजदूरी नहीं रखता तो क्या भगवान हमारी मजदूरी रख सकते हैं? वे ज़रूर देते हैं, बिना मांगे देते हैं, बिना बोले ही हमारी सुनते हैं।

गुरु तेग बहादुर जी के पास एक राजा आया, उन्होंने प्रेमियों के रिहाईश के लिए जो जगह बनाई थी और सतसंग का इंतजाम देखकर वह कहने लगा कि साधु–सन्तों को ऐसी जगह बनाने की क्या ज़रूरत है, वे ऐसी जगह क्यों और किसके लिए बनाते हैं? जब साधु ही हो गए तो उन्होंने किसी जगह से क्या लेना है?

गुरु तेग बहादुर जी खामोश रहे। रात को स्वपन में 'शब्द–रूप' गुरु ने उस राजा को नज़ारा दिखाया। बाहर आंधी आई, बहुत ज़बरदस्त ओले पड़ रहे थे, उसे सिर छिपाने की कोई जगह नहीं मिली। वह राजा एक शेर की गुफा में चला गया हालाँकि उसे पता था कि यह एक शेर की गुफा है लेकिन मौत से डरता इंसान क्या नहीं करता। जब उसने शेर देखा तो भयभीत होकर उसकी आंखें खुल गई। वह जाग गया और कांपने लगा। सुबह आकर राजा ने कहा, '' महाराज जी, मैं रात को स्वपन में ही समझ गया था कि यह जगह आने–जाने वालों के आराम के लिए है। साधु उद्धम कर लेते हैं और प्रेमी लोग आकर फ़ायदा उठा लेते हैं अगर मुझे शेर की गुफा न मिलती तो मैं उस आँधी से बच नहीं सकता था।''

प्यारेयो, सन्त संगत को प्रेरणा देकर प्रेमियों के लिए ही सारा कुछ करवाते हैं कि आई–गई संगत आराम करे, उन्हें सुविधा मिले और स़ंगत ज्यादा से ज्यादा भजन–अभ्यास कर सके। ✻✻✻

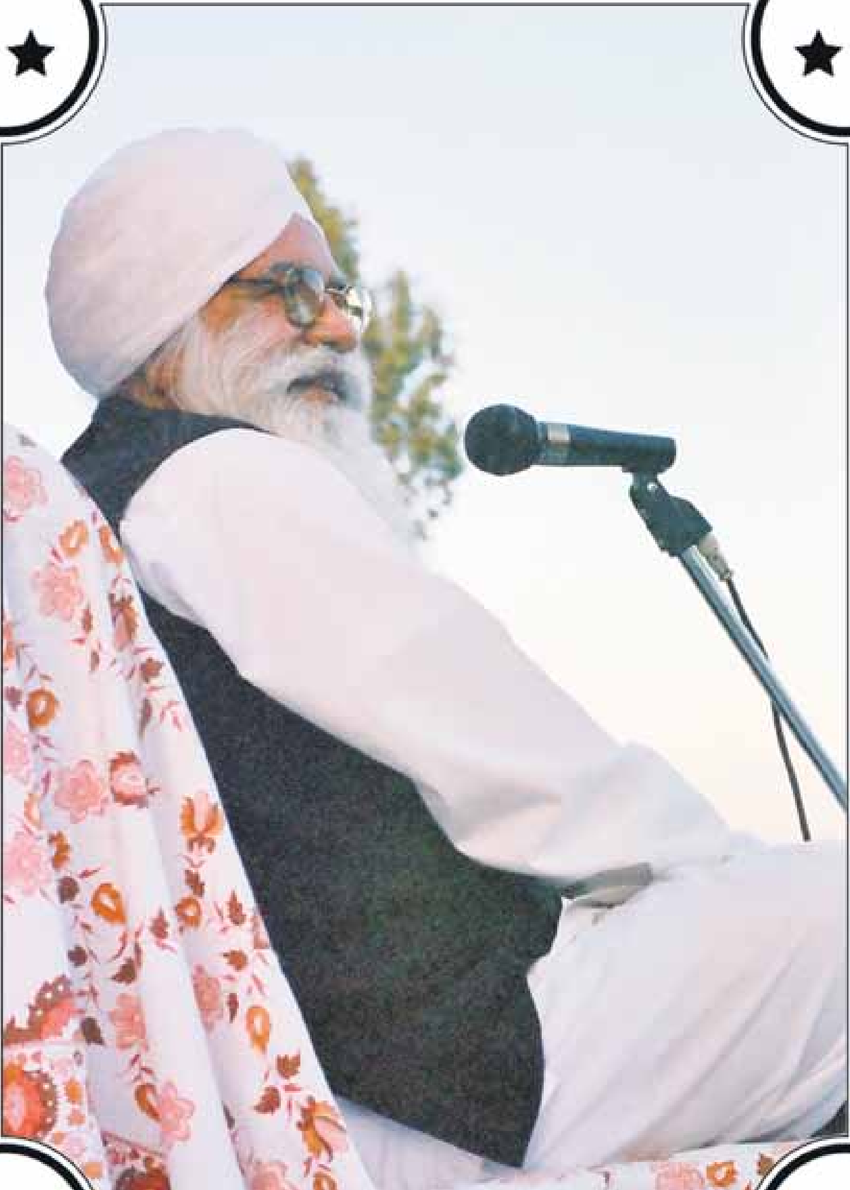

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

हर आत्मा एक समान है

10 अक्टूबर 1992 | सहजो बाई जी की बानी | अहमदाबाद

मैं अपने गुरुदेव सावन रूप कृपाल के आगे नमस्कार करता हूं जो शब्द रूप होकर कण-कण में व्यापक हैं। आपके आगे सहजो बाई जी की बानी रखी जा रही है, आपने पहले भी सहजो बाई के कई सतसंग सुने हैं।

इस टूर पर जब मैं अमेरिका, इडाहो और कनाडा गया तो रसल पर्किंस भी मेरे साथ ही था। बहुत सारी औरतों ने उसके साथ बात की और कहा कि आप बाबाजी को सहजो बाई की बानी पर सतसंग करने के लिए कहें। जैसे कि पहले गउड़ी वार, आसा जी दी वार और सुखमनी साहब पर सतसंग हुए हैं और किताब बनकर प्रेमियों के हाथ में आई जिससे प्रेमियों ने बहुत फायदा उठाया। इसी तरह अगर सहजो बाई की बानी पर भी सतसंग हो जाएं और उसकी किताब बन जाए तो बहुत अच्छा होगा। रसल पर्किंस ने टोरंटो में मुझे विनती की अगर आप सहजो बाई की बानी पर सतसंग कर दें तो संगत को बहुत फायदा होगा।

इसलिए मैं आपके आगे सहजो बाई की बानी का सतसंग रख रहा हूं, गौर से सुनने वाला है। यही फैसला किया गया कि यह सारे सतसंग इंग्लिश में ही हों तो ज्यादा बेहतर होगा अगर सतसंगों की ट्रांसलेशन स्पेनिश या इटालियन भाषा में करेंगे तो सतसंग बहुत छोटे हो जाएंगे।

मैं आशा करता हूं कि जो प्रेमी ट्रांसलेटर की सेवा कर रहे हैं, वे स्पेनिश या इटालियन भाषा वाले प्रेमियों को अच्छे से समझा देंगे। सवाल-जवाब तो एक प्रेमी का ही होता है लेकिन जब वह किताब बनकर संगत के हाथ में आती है तो सारी संगत को फायदा होता है।

आपने मिस्टर ऑबराय की किताब में भाई सुंदरदास जी की हिस्ट्री पढ़ी है, सुंदरदास ने भी महाराज कृपाल के आगे इसी तरह का सवाल किया था कि सन्तमत जो प्यार और भक्ति का मार्ग है, उसमें जितनी एक मर्द को अपने कल्याण या आत्मा का उद्धार करने की जरूरत है, क्या उतनी ही एक औरत को भी है, क्या औरत भी उतनी ही तरक्की कर सकती है जितनी एक मर्द करता है?

महाराज कृपाल ने थोड़े से लफ्जों में बताया कि जितनी एक मर्द को अपने उद्धार और कल्याण करने की जरूरत है उतनी ही एक औरत को भी है। सन्तमत में औरत और मर्द को बराबर का अधिकार है। कबीर साहब से लेकर अब तक जितने भी परम सन्त हुए हैं, सब औरत–मर्द को एक जैसा ही नामदान देते हैं। मर्द को सतसंगी कहा गया है और औरत को सतसंगन कहा गया है।

महाराज कृपाल ने कहा है कि इस वर्तमान समय में आला क्रेडिट वाली औरतें काफी ऊंची तरक्की करती हैं और कर रही हैं क्योंकि औरत के अंदर कुदरती प्यार और भाव अंग ज्यादा होता है। शास्त्रों में औरतों को अर्धांगिनी कहकर ब्यान किया गया है। संसारी काम में भी जितनी अक्ल एक मर्द को है उतनी औरत को भी है, हर एक में बराबर की अक्ल और अधिकार है। जिस तरह कंधे से कंधा मिलाकर मियां–बीवी दुनियावी काम करते हैं उसी तरह औरत सतसंग में भी बराबर की अधिकारी है।

सन्त हमें तरक्की करने के लिए नाम देते हैं। जब हम नाम की कमाई करते हैं, फैले हुए ख्याल को नौं द्वारों से निकालकर आंखों के पीछे लाते हैं तब हमारा स्थूल पर्दा उतर जाता है। स्थूल देश के अंदर स्थूल इंद्रियां और स्थूल मन है। जब हम स्थूल पर्दा उतार कर सूक्ष्म में जाते हैं तो वहां सूक्ष्म इंद्रियां और सूक्ष्म मन है। जब ब्रह्म में जाते हैं तो वहां कारण शरीर, कारण इंद्रिया और कारण मन है।

जब हम पारब्रह्म में जाते हैं तो वहां शुद्ध आत्मा है, वहां पहुंचकर आत्मा कर्मों से रहित हो जाती है। वहां पहुँचकर पता चलता है कि आत्मा न औरत है न मर्द है, वहां लिंग भेद समाप्त हो जाता है। आत्मा परमात्मा की अंश है, परमात्मा पिता हैं और आत्मा उनकी बच्ची है।

सन्तों की तीसरी मंजिल पारब्रह्म है और पांचवी मंजिल सचखण्ड है। जो आत्माएं पारब्रह्म में नहीं पहुंची, उन्हें क्या पता है कि औरत और मर्द का भिन्न–भेद कहां जाकर खत्म होता है। चाहे आत्मा अमेरिका की रहने वाली है, चाहे हिन्दुस्तान या यूरोप की, सबके अंदर एक ही आत्मा है। जो महात्मा अंदर जाते हैं उनके अंदर ज्ञान पैदा हो जाता है, उनका मनुष्य मात्र के साथ तो प्यार होना ही था, पशु–पक्षी के साथ भी उतना ही प्यार होता है। जितने भी महात्मा सचखण्ड से आए बेशक उन्हें आए हुए चार हजार साल, दो हजार साल या पांच सौ साल हो गए हों और वे आज हमारे बीच मौजूद नहीं लेकिन आज भी उनकी शिक्षा और उनके ग्रंथ पढ़ने से हमें यही पता चलता है कि उन महात्माओं का हर कौम–मजहब और औरत–मर्द के साथ एक जैसा ही प्यार था।

ऐसे महात्मा जितना समय संसार में रहे उतना समय दुनिया को उनकी शिक्षा और अनुभव मिलता रहा। जब वे संसार में दो–चार या दस पीढ़ियां रहकर गुप्त हो गए, मालिक के पास चले गए तो संसार में अनुभवी पुरुषों की कमी हो गई और वहां आत्माओं को जो फ़ायदा पहले मिलता था, वह मिलने से हट जाता है।

हम लोग समाज बनाकर अपने ही मतलब के टीके कर लेते हैं और एक दूसरे के साथ नफरत पैदा कर लेते हैं। परमात्मा फिर अपने प्यारे अनुभवी पुरुषों को भेजते हैं, वे आकर फिर हमें इकट्ठे बैठाकर नाम का प्रचार करते हैं और बताते हैं कि परमात्मा एक हैं, उनके मिलने का साधन और तरीका भी एक है।

किसी भी महात्मा ने औरत जाति की निंदा नहीं की बल्कि बराबर का अधिकार रखा है। यह खासियत सन्तों के अंदर ही है। आप 'आसा जी की वार' पढ़ेंगे तो उसमें भी गुरु नानक देव जी ने कहा है:

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान।

महात्मा के देखने का दृष्टिकोण या नजरिया हमसे अलग होता है। सन्तों की नजर आत्मा पर होती है। आत्मा निर्दोष है और परमात्मा की बच्ची है, बुराई मन में होती है।

सहजो बाई राजपूताना के डेहरा गांव में ढूसर कुल में पैदा हुई थी। इनके गुरुदेव भी उसी कुल में पैदा हुए थे। सारी जिंदगी जो गुरु ने कहा, इन्होंने वह कमाई की। ये महात्मा चरनदास की प्रमुख गुरमुख शिष्या थीं। आपके आगे सहजो बाई का सहज प्रकाश रखा जा रहा है, गौर और प्यार से इस बानी को समझें। मैं सतसंग शुरू करने से पहले आपको एक छोटी-सी कहानी सुनाता हूं जो सन्तमत से बहुत ही ताल्लुक रखती है।

एक राजा था, उसकी रानी ने उससे सवाल किया कि अपने वजीर को तनख्वाह ज्यादा मिलती है और दरबारी को कम मिलती है जबकि काम दरबारी ज्यादा करता है और वजीर तो कार्यमुक्त ही रहता है। राजा ने सोचा अगर मैंने इसे बातों से समझाया तो शायद इस पर असर नहीं होगा क्यों न इसे एक उदाहरण देकर समझाया जाए।

राजा ने दरबारी को बुलाया और उससे कहा, ''सुना है कि बाहर कुत्तिया ने बच्चे दिए हैं, जाओ, उसे देखकर आओ।'' वह गया और वापिस आकर कहने लगा, ''हां जी, कुत्तिया सुई हुई है।'' राजा ने पूछा, ''कितने बच्चे थे?'' उसने कहा, ''जी, यह तो पता नहीं।'' राजा ने उसे दोबारा भेजा तो उसने बच्चे गिने और राजा को आकर बताया कि चार बच्चे हैं। राजा ने कहा, ''कितनी कुत्तिया हैं और कितने कुत्ते हैं?'' उसने कहा कि यह तो पता नहीं। राजा ने उसे फिर भेजा, उसने आकर कहा,

''दो कुत्तिया और दो कुत्ते हैं।'' राजा ने पूछा, ''उनके रंग कैसे हैं?'' वह कहने लगा कि रंग तो मैंने देखे नहीं। उसे फिर भेजा दरबारी ने आकर कहा, ''जी, दो काले हैं और दो सफेद हैं।'' राजा ने कहा, ''कुत्ते काले हैं या कुत्तिया सफेद हैं?'' वह कहने लगा, ''जी यह भी नहीं देखा।''

अब राजा ने वजीर को बुलाकर कहा कि सुना है बाहर एक कुत्तिया ने बच्चे दिए हैं। वजीर ने जाकर देखा और आकर राजा को अच्छे से समझा दिया कि जी, कुत्तिया ने चार बच्चे दिए हैं। दो कुत्तिया है और दो कुत्ते हैं। कुत्ते काले हैं और कुत्तिया सफेद रंग की हैं। उनके खाने-पीने का भी इंतजाम कर दिया है और रहने के लिए एक छोटा-सा मकान भी बना दिया है, वे सब आराम से रह रहे हैं।

यह तो एक कहानी है लेकिन सच्चाई यह है कि हम कर्मकांड में फिरते हैं, कोई जप करता है कोई तप करता है लेकिन परमात्मा के बारे में हमें उस दरबारी की तरह कोई ज्ञान नहीं होता कि परमात्मा गोरे हैं, वे कहां रहते हैं, उनके हाथ-नाक या पैर हैं या नहीं? वे कुछ खाते हैं या नहीं? लेकिन जब हम सन्तों से मिलते हैं तो सन्त हमें एक बार में ही बिठाकर सब कुछ समझा देते हैं कि देख प्यारेया, अंदर जाकर आंखों से परमात्मा को देख लो कि वे काले हैं या गोरे हैं। इसलिए सन्तों की महिमा ज्यादा गाई गई है चाहे वे किसी भी जाति के हों, औरत हों या मर्द हों।

कर जोरूं परनाम करि, धरूं चरन पर सीस।
दादा गुरु सुकदेव जी पूरन बिस्वा बीस।।

सहजो बाई जी की बानी पढ़ने से पता चलता है कि आपके अंदर गुरु के प्रति श्रद्धा और प्यार तो था ही लेकिन उनके गुरु के गुरु सुखदेव मुनि जिन्हें आप दादा गुरु कहकर ब्यान करती हैं, उनके साथ भी बहुत लगाव था। महात्मा चरनदास जी के पिता बहुत भक्ति भाव में रहते थे वे एक दिन बाहर जंगल में अभ्यास करने गए तो वहां से उनके कपड़े ही

मिले, वे अलोप हो गए और उनका कुछ पता नहीं चला। चरनदास जी भी उसी तरह सुबह–सुबह बाहर जंगल में निकल जाते थे, वहां जाकर अपना अभ्यास करते या आंखें बंद कर लेते थे। हमारे महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''भूखे को रोटी और प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है, जरूर मिलती है।''

महात्मा चरनदास जी की जबरदस्त चाह थी तो वेद व्यास जी के लड़के सुखदेव मुनि जिन्हें अमर कहकर भी ब्यान किया है, उन्होंने चरनदास जी को जंगल में दर्शन देकर 'शब्द–नाम' का अंतरी भेद दिया। माता–पिता ने उनका नाम रणजीत सिंह रखा था लेकिन सुखदेव मुनि ने उनका नाम चरनदास रख दिया।

सहजो बाई अपने गुरु को प्रणाम करती हैं और दादा गुरु सुखदेव मुनि को भी प्रणाम करती हैं कि आपने मेरे गुरु पर कृपा की। जैसे हम रोज़ ही सतसंग में महाराज कृपाल के आगे नमस्कार और आभार प्रकट करते हैं और महाराज सावन सिंह जी के आगे भी आभार प्रकट करते हैं कि उन्होंने खुले दिल से हमारे गुरुदेव महाराज कृपाल पर दया की और प्यार से भरपूर कर दिया। स्वामी जी महाराज ने भी कहा हैः

पहिले दाता सिष भया जिन तन मन अरपा सीस।
पीछे दाता गुरु भये जिन नाम दिया बकसीस।

परमहंस तारन तरन, गुरु देवन गुरु देव।
अनुभै बानी दीजिये, सहजो पावै भेव।।

सहजो बाई कहती हैं, ''गुरु पूर्ण हैं, वे सब देवताओं के शिरोमणि देवता गुरु हैं। मैं अनुभव बानी का वरदान मांगती हूं, आप मुझ पर कृपा करें।'' पंजाबी की कहावत है:

जेहड़ा काम कीता लोड़ीऐ, पहिलां आज्ञा गुरु कोलों ले लईए।

जो लोग गुरु में समा जाते हैं, जिन्होंने गुरु और परमात्मा को देख लिया है, वे कोई भी काम शुरू करने से पहले अपने गुरु के आगे नमस्कार करते हैं और उनकी आज्ञा लेते हैं। गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं:

कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ।
कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ।

नमो नमो गुरुदेवन देवा नमो नमो गुरु अगम अभेवा।
नमो नमो निरलम्ब निरासा नमो नमो परमातम बासा।।

अब आप प्यार से कहती हैं कि हे गुरुदेव, मेरी कोटन-कोट बार आपके आगे नमस्कार है क्योंकि आप देवताओं के शिरोमणि देवता हैं। कबीर साहब ने भी कहा हैं:

गुरु को सिर पर राखिये चलिये आज्ञा माहिं।
कहै कबीर ता दास को तीन लोक डर नाहिं।।

नमो नमो त्रिभुवन के स्वामी नमो नमो गुरु अंतरजामी।
नमो नमो गुरु पातक हरता नमो नमो पारायन करता।।

आप कहती हैं कि मैं कोटन–कोट बार नमस्कार करती हूं क्योंकि आप काल के देश में नहीं आते और तीनों भवनों से ऊपर रहते हैं। आपके नाम में शक्ति है, आप सबके पापों को हरते हैं। आप जिसके अंदर अपना नाम रख देते हैं, उसके पाप इस तरह नाश हो जाते हैं जैसे लकड़ियों के बहुत बड़े ढेर को अग्नि की छोटी सी चिंगारी खत्म कर देती है।

गति मति छाके आनँद रूपा नमो नमो गुरु ब्रह्म सरूपा।
नमो नमो मम प्रान पियारे नमो नमो तिर्गुन तें न्यारे।।

मैं कोटन–कोट बार नमस्कार करती हूं क्योंकि आप मुझे प्राणों से भी प्यारे हैं। इंसान की जिंदगी कितनी कीमती है, कोई मामूली–सी आफत आती है तो हम किस तरह बचने की कोशिश करते हैं। आप सोचकर देखें जब हम किसी से इससे भी ज्यादा प्यार करते हैं तो वह कितना प्यारा होगा? गुरु रामदास जी कहते हैं:

मात पिता सुत भ्रात मीत सभहूँ ते पिआरा राम राजे।

भक्ती ज्ञान जोग के राजा सहजो के पुरवो सब काजा।
जो कोइ सरन तुम्हारी आयो तुरियो तीत बिज्ञान बसायौ।

आप प्यार से कहती हैं कि मैं आपको नमस्कार करती हूं क्योंकि आप भक्ति के राजा और जोग के राजा हैं। जो फल जोग से नहीं मिलता, वह आपका नाम जपने से मिलता है इसलिए जो कोई भी आपकी शरण में आया, उसने शांति प्राप्त की। वे तीनों गुण–सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण से ऊपर जाकर शब्द के साथ जुड़ा और शांति के पास पहुंचा।

प्यारेयो, दुनिया की मान–बड़ाई, धन–दौलत और किसी विषय–विकार में शांति नहीं मिलती बल्कि और अग्नि भड़क उठती है। शांति

अपने घर सचखण्ड पहुंचकर ही है। इसलिए सहजो बाई कहती हैं कि मैं जब से आपकी शरण में आई हूं, मैंने शांति प्राप्त की और मेरा परमात्मा से मिलने का अधूरा काम पूरा हो गया।

निर्मल आनंद देत हौ, ब्रह्म रूप करि देत।
जीव रूप की आपदा, ब्याधा सब हरि लेत।।

सहजो बाई कहती हैं कि आप निर्मल, प्योर और पवित्र हैं। जो भी आपकी शरण में आता है, आप उसे भी निर्मल, प्योर और पवित्र कर देते हैं और सबके पाप हरते हैं।

नमो नमो सुकदेव गुसाई प्रकट करी भक्ती जग माहीं।।

आप अपने दादा गुरु सुखदेव मुनि के आगे फिर नमस्कार करती हैं कि जो भक्ति अलोप हो गई थी, आपने आकर उसे प्रकट किया और चरनदास जी को अपने चरणों में लगाया।

श्रीमत भागवत भानु प्रकासा पढ़ सुनि कटै तिमिर की फाँसा।
ज्ञान जोग की नौका कीन्ही चरनदास केवट को दीन्ही।।

अब आप अपने दादा गुरु सुखदेव मुनि के आगे नमस्कार करती हैं और बड़ाई करती हैं कि आपने खुद शब्द की नाव चलाई, जीवों को बैठाकर सचखण्ड ले गए और वही नाव चरनदास जी को सौंप गए कि भई, मेरे बाद आप इसके मल्लाह हैं और आपने इस नाव को चलाना है।

मैं महाराज कृपाल के बारे में बताया करता हूं कि वे मुझे बताने लगे जब हुजूर बाबा सावन सिंह जी ने उन्हें यह कहा कि देख भई कृपाल सिंह, मेरी तालीम गुम न हो जाए, यह इसी तरह जारी रहनी चाहिए तब कई कारण थे और वे उनके आगे मजबूर थे।

जब हुजूर यह बातें कर रहे थे तो मेरे पैरों तले ज़मीन खिसक रही थी कि ये मेरे साथ इस तरह की बातें क्यों कर रहे हैं? यही वचन उन्होंने मेरे

ऊपर लागू किया कि देख भई, थ्योरी बताने वाले जगह-जगह होंगे लेकिन मेरी तालीम जारी रखनी है। सन्तों की तालीम अनुभव और तवज्जो होती है।

बहुतक पापी जीव चढ़ाये। भवसागर सूँ पार लँघाये।।

आप अपने गुरु की महिमा करती हैं कि जो नाव सुखदेव मुनि ने चरनदास को दी थी, चरनदास जी के पास चाहे किसी भी कुल-जाति या कोई कितना भी पापी आया, वे उसे उस नाव में बैठाकर सचखण्ड ले गए।

किरपा बल्ली हाथ में राखें। काहू तें दुरबचन न भाखें।।

ऐसे सन्त-महात्मा सदा दया ही करते आए हैं। उनके गुरु ने उन्हें प्यार और दया ही दी है, बख्शीश करनी ही सिखाई होती है इसलिए वे किसी को दुर्वचन नहीं कहते और मामूली-सी बातों के पीछे किसी को श्राप नहीं देते। महाराज सावन सिंह जी ने भी बाबा जयमल सिंह जी के आगे यही फरियाद की थी कि मेरी बद्दुआ किसी को न लगे, वर जरूर लग जाए। यही महाराज कृपाल ने मुझे बताया कि मैंने हुजूर सावन सिंह के आगे यही विनती की थी कि सच्चे पातशाह, हम जीव हैं, हम पर कृपा रखना। मेरा वर ही किसी को लगे, मेरी बद्दुआ किसी को न लगे।

अमृत वचन बोलि बैठावें। नर नारी लौं पतित तिरावें।।

सहजो बाई कहती हैं कि चाहे नर है, चाहे नारी है जो भी सन्तों की शरण में आता है, वे सबको बराबर का अधिकार और प्यार देते हैं, सबको एक ही नजर से तारते हैं।

कलिजुग में सतजुग बिस्तारा राम भक्ति का खोल दुवारा।।

महाराज कृपाल भी कहा करते थे कि आप सतयुग-सतयुग तो करते हैं लेकिन कलयुग या सतयुग बाहर से नहीं आएंगे। जहां कलह-कलेश, लड़ाई-झगड़े हैं, उसे कलयुग कहा जाता है कि यह कल पैदा कर रहे हैं।

जहां भक्ति भाव हो रही है, सतसंग हो रहे हैं, उसे सतयुग कहते हैं। जब आप फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए अंदर शब्द के साथ जोड़ लेते हैं तो अंदर शांति आ जाती है, इससे ज्यादा सतयुग तो अंदर ही आ जाता है। इसलिए आप प्यार से कहती हैं कि वे कलयुग में आकर सतयुग ला देते हैं और भूले-भटके जीवों को परमात्मा की भक्ति में लगा देते हैं।

सुनि सुनि कै जिज्ञासू आवैं उनहूँ के सन्देह मिटावैं।।

जब भी सन्त संसार में आकर अपने गुरु की दया से गुरु के कारज को आरंभ करते हैं, सतसंग शुरू करते हैं तो उस वक्त सतसंगी जिस तरह दूत संदेश पहुंचाते हैं, वे भी हर जगह दूर-नजदीक अपने जान-पहचान वालों को अपने गुरु का संदेश पहुंचाते हैं। उस जगह की जानकारी देते हैं कि प्यारेयो, अगर आप शांति चाहते हैं और अपनी तपती आत्मा को शांति दिलवाना चाहते हैं तो महात्मा का सतसंग फलां जगह पर है।

वैसे यह गुरु सिख का अपना मामला होता है, उनके लिए दूर या नजदीक का कोई फर्क नहीं पड़ता। वे चाहे किसी को भी जरिया बनाएँ या सीधा जाकर उससे मिलें लेकिन सतसंगी भी दूत का काम करते हैं। वे सतसंग के जरिए एक-दूसरे को खबर पहुंचाते हैं कि हमारे सन्त आने वाले हैं, आप सतसंग सुनें, नाम की कमाई में लगें।

जितने भी लोग सन्तों के पास आते हैं, सन्त सबको मालिक का संदेश देते हैं कि जिस परमात्मा ने आपको संसार में भेजा है, आओ हमारी मार्फत परमात्मा आपको बुला रहे हैं। जब पहली बार मेरी मुलाकात परमात्मा कृपाल के साथ हुई तो उन्होंने यही शब्द लिया:

जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ, तुम घरि आवहु मेरे मीत।।

जो भी जीव सन्त-महात्मा मालिक के प्यारों के पास जाता है, वे उन्हें परमात्मा का संदेश देते हैं कि तेरे लिए यह संदेश है।

***

धन्य अजायब

16 पी. एस. आश्रम में वर्ष 2024 के सतसंगों के कार्यक्रम

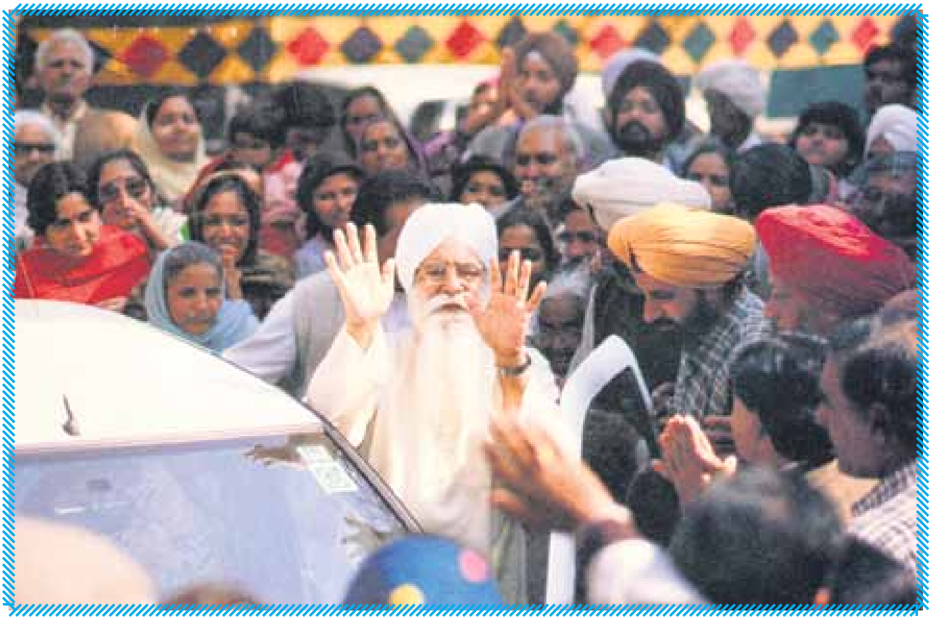

1. 7-12 सितंबर	शनिवार से वीरवार	6 दिन
2. 4-6 अक्तूबर	शुक्रवार से रविवार	3 दिन
3. 1-3 नवंबर	शुक्रवार से रविवार	3 दिन
4. 29 नवंबर–1 दिसंबर	शुक्रवार से रविवार	3 दिन

RNI No - RAJHIN/2003/9899